ज़कात टैक्स नही इबादत है

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

ज़कात जिसको टैक्स समझा जाने लगे यानी आज कल आम तौर पर जो लोग मालदार है और उनपर ज़कात फर्ज़ है उनमे से बहुत से वो है जो ज़कात की अदायगी का ऍहतेमाम नही करते और उनको ज़कात के लिये माल निकालना ऐसा मुश्कील और तबीयत पर बोज़ गुज़रता है जैसे के टैक्स हो हाला के ढाई फिसद यानी चालीस्वा हिस्सा कोई बडी बात नही है मामूली सी चीझ है आदमी अगर रजा और रगबत के साथ अल्लाह की नजदीकी ढुंढते हूवे इसको अदा करेगा तो बडी बरकत का जरिया बनता है अब लोगो का मिजाज़ ऐसा बनता जा रहा है के फुजूल खर्ची हज़ारो और लाखो की करलेन्गे लेकिन अल्लाह के इस फरीज़ा को अदा करने की तौफीक नही होती उसकी तरफ भी तवज्जुह करने की ज़रूरत है.

जैसे हमारे यहा हुकूमतो ने गरीबी की एक रेखा मुकर्रर की है के गरीबी रेखा के नीचे फला आदमी ज़िन्दगी गुज़ार रहा है ये हुकमत

की तरफ से गरीबी रेखा है और एक गरीबी रेखा शरीयतने भी मुकर्रर की है तो ये निसाब जिसके पास है वो शरीयत की निगाह मे मालदारी है और वो मालदारी की रेखा है उससे नीचे वाला गरीब समझा जायेगा तो निसाब के मालिक पर ज़कात वाजिब और वो भी बहुत कम ढाई फीसद यानी सौ मे ढाई रूपिया है.

आज तो देखेन्गे के मरकज़ी हुकूमत और सूबाइ हुकमत और शहर की जो कारपोरेशन है उनकी तरफ से जो मुकर्रर किया जाता है उसकी मिकदार कई-कई फीसद(%) होती है आदमी की जो कमाई होती है उसमे से ४५, ५०, ६० फीसद तो उसीमे निकल जाता है, लेकिन शरीयते मुतहरा ने ज़कात की जो मिकदार मुकर्रर की है वो इन्तेहाइ कम है फिर हुकूमत की मिकदार भी कैसी है जैसे इनकम टैक्स है के जूं जूं कमाई बडती जायेगी उसके ऍतेबार से उसके फीसद भी बडते जायेन्गे जब के शरीयत कोई फीसद नही बढती आप के पास एक लाख रूपीया है तब भी ढाई परसन्ट है और दस करोड और अरबो रूपिये है तब भी आप पर ढाई परसन्ट है देखीये कितनी आसानी है यानी एक मामूली सी मिकदार और मांगने वाला भी कौन अल्लाह जिसने हमे ये माल दिया.

हमे ज़कात का जो हुकम दिया गया है उसको पूरी खूश दिली के

साथ पूरी रग्बत के साथ शोक और ज़ोक के साथ पूरा करना चाहिये कौन मांग रहा है? जिस वकत ज़कात निकाल रहा हो तो उसका इस्तेहज़ार किया जाये के मे अल्लाह के लिये निकाल रहा हु मे अल्लाह को दे रहा हु.

हदीस मे आता है के जब कोई आदमी अपनी ज़कात का माल किसी गरीब को देता है तो वो माल पेहले अल्लाह के हाथ मे जाता है फिर वो माल गरीब के हाथ मे पोहचता है बहुत से लोग ज़कात की अदायगी के वकत अपना चेहरा बिगाडते है और जिन को दिया जा रहा है उनकी तरफ से नागवारी का इज़हार करते है (नउज़ुबिल्लाह) ये तो बडी खतरनाक चीझ है ये कोई ऍहसान नही है आप तो अल्लाह का हुकम पूरा कर रहे है भाई किसी का हम पर मुतालबा है किसी के हम पर सो रूपिये है उसने हम को कहेलवाया के मेरे तुमसे जो सो रूपिये लेने के है वो फला को दे दो तो किया उसको नागवारी समझेंगे अपने माथे पर कोई शिकन डालेन्गे? नही डालेन्गे वो देखेगा तो किया समझेगा इतना तो ख्याल रखेन्गे.